राजा। प्रिये। पश्य।

उदयोर्वीभृत एव बद्धदनापहृतकान्तिसर्वस्वः।
फूत्कर्तुमिवोर्ध्वकरः स्थितः पुरस्तान्निशानाथः॥

ननु प्रिये दर्शितमनेनोद्गच्छता जडत्वम्। कुतः।

5 किं पद्मस्य रुचिं न हन्ति नयनानन्दं विधत्ते न किं
वृद्धिं वा कुषकेतनस्य कुरुते नालोकमात्रेण किम्।
वक्त्रेन्दौ तव सत्ययं यदपरः शीतांशुरभ्युद्गतो
दर्पः स्यादमृतेन चेदिह तदप्यस्त्येव बिम्बाधरे॥

वासवदत्ता। सरोषमवगुण्ठनमपनीय। अज्जउत्त। किं अहं सच्चं जेव्व साअरिआ।

10 तुमं उण साअरिआणुरत्तहिअओ सव्वं जेव्व साअरिआमअं पेक्खसि।

राजा। सवैलक्ष्यमपवार्य। कथं। देवी वासवदत्ता। वयस्य। किमेतत्।

विदूषकः। सविषादम्। भो वअस्स। अम्हाणं जीविदसंसओ जादो एसो।

राजा। उपविश्याञ्जलिं बद्ध्वा। प्रिये वासवदत्ते। प्रसीद प्रसीद।

वासवदत्ता। अश्रूणि विधारयन्ती। अज्जउत्त। मा एव्वं भण। अप्पगदक्खु एदे अक्खरा।

15 विदूषकः। आत्मगतम्। किं दाणिं एत्थ करिस्सं। भोदु एव्वं दाव। प्रकाशम्। भो-दि। महाणुभावक्खु तुमं। ता खमीअदु दाव एक्को अवराहो पिअवअस्सस्स।

वासवदत्ता। अज्जवसन्तअ। णं पढमसंगमे विग्घं करन्तीए मए जेव्व एदस्स अवरद्धं।

राजा। एवं प्रत्यक्षदृष्टव्यलीकः किं विज्ञापयामि।

आताम्रतामपनयामि विलक्ष एव
20 लाक्षाकृतां चरणयोस्तव देवि मूर्ध्ना।
कोपोपरागजनितां तु मुखेन्दुबिम्बे
हर्तुं क्षमो यदि परं करुणा मयि स्यात्।

इति पादयोः पतति।

वासवदत्ता। हस्तेन वारयन्ती। अज्जउत्त। उट्ठेहि उट्ठेहि। णिल्लज्जोक्खु सो जणो

25 जो अज्जउत्तस्स एव्वं हिअअं जाणिअ पुणो वि कुप्पदि। ता वीसत्थं चिट्ठदु अज्जउत्तो। अहं गमिस्सं। इति गन्तुमिच्छति।

काञ्चनमाला। भट्टिणि। करेहि से पसादं। एव्वं चरणपडिदं महाराअं उज्झिअ गदाए देवीए अवस्सं पच्छादावेण होदव्वं।

वासवदत्ता। अवेहि अपणिउदे। को एत्थ पसादस्स कालो।

30 इति निष्क्रान्ते।

राजा। देवि। प्रसीद। प्रसीद।

विदूषकः। भो। उट्ठेहि। गदा देवी। ता कीस एत्थ अरणरुदिदं करेसि।

राजा। मुखमुत्तानीकृत्य। कथम्। प्रसादमकृत्वैव गता देवी।